Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity
ISSN: 2279-0233
Continuous issue-23 | April – May 2016

तुलनात्मक साहित्य और सांस्कृतिक अनुवाद

प्रस्तावना- भारतीय साहित्य अनेकों भाषाओं में अभिव्यक्त भारत की सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों एवं तद्जनित परिणामों का बृहद कोष है। बहु-भाषिकता, संस्कृतिगत बहुलता और सैद्धान्तिक विभिन्नता, भौगोलिक जटिलता आदि स्वतंत्र भारत की विशिष्टताएँ हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। भारत की बहुभाषिकता, इस राष्ट्र की अस्मिता और शक्ति है। इसकी विविधता में एक अंतर्लीन सांस्कृतिक समन्वय की ऊर्जा निहित है जो कि अनेकता में एकता की संचेतना को व्याप्त करने में सहायक है। वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक बहुलता के साथ लोगों के आचार-विचार-व्यवहार, धार्मिक और आध्यात्मिक चिंतन के अंतर्विरोध, सामाजिक रूढ़ियों और राजनीतिक विचारधाराओं के अंतर मंथन की प्रक्रिया यहाँ निरंतर गतिमान रही है। यही इस देश की बहुभाषिक संस्कृति की विशिष्टता है।

भारत एक वैविध्यमय देश है जो बहुत सी जातियों, सभ्यताओं, प्रदेशों, धर्मों तथा भाषाओं का समाहार है। इसमें अनेक सांस्कृतिक विशिष्टताओं की अभिव्यक्ति विद्यमान है। विभिन्न भाषाओं में रचित इस साहित्य में मौजूद विविधता के बावजूद एक आम विश्वास, आस्था, मिथक तथा जनश्रुतियाँ इनमें विषयवस्तु की एकता को दर्शाती हैं।

तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की महत्ता- भारतीय साहित्य अनेकों भाषाओं में अभिव्यक्त है। इन भाषाओं में रचित विपुल साहित्य के परस्पर आदान-प्रदान के लिए एक भाषिक उपकरण की आवश्यकता होती है। 'अनुवाद' ही वह उपकरण, औज़ार तथा माध्यम है जिससे भारतीय साहित्य की विपुल धरोहर और समकालीन रचनाशीलता को एक दूसरे के सामने रखा जा सकता है। भारतीय साहित्य को एकभाषिक संप्रेषणीयता की स्थिति से अनुवाद के माध्यम से द्विभाषी अथवा बहुभाषी संप्रेषणीयता की स्थिति में लाया जा सकता है। 'अनुवाद' ही वह माध्यम है जो अंतरभाषिक साहित्यिक संवाद स्थापित करने में सक्षम है।

अनुवाद में ही भाषिक विभिन्नता और अलगाव को दूर करने की क्षमता है। अनुवाद सांस्कृतिक चेतना को जगाता है। इससे देश में सांस्कृतिक एकता का प्रचार होता है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है और विभिन्न प्रदेशों के सामाजिक संस्कार एवं लोक संस्कृति के ज्ञान के लिए यह आवश्यक है।

तुलनात्मक साहित्य के अक्षय भंडार के अंतरभाषिक रूपान्तरण के लिए अनुवाद की प्रक्रिया ही एक मात्र उपाय है। 'अनुवाद' के द्वारा ही विभिन्न भाषाओं के मध्य मौजूद संप्रेषण के गतिरोध को तोड़ा या मिटाया जा सकता है। क्योंकि भाषा संस्कृति की वाहिका होती है। अनुवाद प्रक्रिया में स्रोतभाषा के साहित्य के सांस्कृतिक तत्वों का लक्ष्यभाषा में रूपांतरण होता है। इस तरह 'अनुवाद' सांस्कृतिक आदान-पदान की प्रक्रिया को सम्पन्न करती है। भारतीय साहित्य के अंतरभाषिक अनुवाद

से देश में सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा सांस्कृतिक एकता के प्रचार को प्रभावी बनाया जा सकता है। भारतीय साहित्य में विभिन्न प्रान्तों की सामाजिकता और संस्कृति बोध के साथ साथ लोक संस्कृति भी व्यक्त होती है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न प्रान्तों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों के प्रति देश के अन्य क्षेत्रों के लोगों में विशेष संवेदना और भावनात्मक लगाव पैदा होता है। भारत के वैभवपूर्ण सांस्कृतिक अतीत को विदेशी समाज अनुवाद के माध्यम से ही जान सका है।

भाषाई भिन्नता के बाधक तत्त्वों की उपस्थिति के बावजूद मनुष्य जाति अपनी धारणाओं की अभिव्यक्ति निरन्तर करते आ रहे हैं, तो इसका श्रेय अनुवाद को ही जाता है। अनुवाद एक श्रेष्ठ कार्य है चूँकि वह दो सभ्यताओं, संस्कृतियों, कालखंडों, भावों अथवा विचारों के बीच का सेतु है। इस दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन के लिए अनुवाद एक अपरिहार्य उपकरण है जिससे साहित्य में वर्णित विषय वस्तु और उसके भाव सौंदर्य का आस्वादन किया जा सकता है। तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन बिना अनुवाद के असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

सांस्कृतिक अनुवाद का सन्दर्भ- "सामाजिक परिपेक्ष्य में अनुवाद के तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं- कार्यालयीन अनुवाद, व्यावसायिक अनुवाद तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुवाद।...साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुवादों का समाज पर बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा है।'1

सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के रूप में अनुवाद एक जटिल राजनीतिक कार्य है जो बहुत सारे महत्वपूर्ण प्रश्न के रूप में उत्तर माँगता है। "अनुवाद करता कौन है? किसका अनुवाद अनुदित हो रहा है? पाठ का लेखक कौन है? अनुवाद निवेदित किसको है? इस प्रक्रिया में संलग्न लोगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है? और उनकी वर्ग, लिंग, जाति क्या है? जिसे नीत्से 'कारगर इतिहास' कहते हैं-अनुवाद कृत्य का अंत्रभुक्त और अनिवार्य हिस्सा बन जाता है।"2

प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट पीठिका होती है। अनुवाद की समस्याएँ स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की सांस्कृतिक पीठिका से भी संबंधित है। भौगोलिक वातावरण, रहन-सहन, खाद्य सामग्री, रीति-रिवाज, वेशभूषा आदि सांस्कृतिक पीठिका के अभिन्न अंग हैं। अतः डॉ. ओंकार कौल का यह कथन एकदम सही है कि "सांस्कृतिक पीठिका जितनी अधिक भिन्न हो, अनुवाद करना उतना ही अधिक कठिन है।"3

सांस्कृतिक अनुवाद की दिशा में सुसन बेसनेट और आन्द्रेल फेवेयर ने अनुवाद के क्षेत्र में पहले इतिहास और संस्कृति के लिए और फिर जल्दी ही लिंगवाद, उत्तर-उपनिवेशवाद और सांस्कृतिक सन्दर्भों जैसे अध्ययन-क्षेत्रों के साथ अनुवाद के सापेक्ष अध्ययन और विचार-विनिमय की प्रेरणा जगाई। जब कि आज तो साहित्यिक समालोचना के नए सैद्धान्तिक दृष्टिकोण को भी अन्तरानुशासनिकता और अन्तर्सांस्कृतिकता से संवाद करने की जरूरत आन पड़ी है।

अनुवाद साहित्य की वह विधा है जो विभिन्न भाषाओं के जरिए अलग-अलग क्षेत्र, संस्कृति से परिचय कराते हुए उनमें समानता के तत्त्व निचोड़ती है। अनुवाद सांस्कृतिक साम्य दर्शाता है। "अनुवाद से न सिर्फ अपने सांस्कृतिक अतीत और वर्तमान में, बल्कि अपनी और विदेशी संस्कृतियों में जीवंत संवाद घटित किए।"4 डॉ.प्रभाकर माचवे ने साहित्यानुवाद के पाँच प्रयोजन माने हैं-जिसमें से एक है- दो भाषाओं और संस्कृतियों का परस्पर आदान-प्रदान या मैत्री अधिक सुदृढ़ करना।

जैसे उमर खैयाम के अनुवाद के बाद रुबाई से परिचय बढ़ा, हाइकू से जापानी कविता की अभिज्ञा बढ़ी, तुलनात्मक साहित्य में सहायक होना।5

प्रा.दिलीप सिंह के शब्दों में कहें तो -"अर्थगत संरचना के विश्लेषण के समय प्रतीक के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण अनिवार्य है। अर्थात् इकाई के समाज स्वीकृत एवं समाज प्रयुक्त अर्थ प्रतीक से संबद्ध होने की संभावना बराबर रहती है। अतः अनुवाद में इकाई की बहुव्याप्ति और चयनगतता (substitutability) पर भी अपनी दृष्टि रखनी पड़ती है।"6

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है, जिसमें उस समाज की सारी विशेषताएँ निहित होती हैं। इन संस्कृतियों को अभिव्यक्त करने का भाषा एक सशक्त माध्यम है। संस्कृति में धर्म, जाति, रीति-रिवाज, वेशभूषा, खानपान, रिश्ते-नाते आदि आते हैं। अनुवाद मूलभाषा पाठ का सत्य लक्ष्य भाषा में व्यक्त करने में तभी कामयाब हो सकता है जब अनुवादक मूलभाषा के पाठ की संस्कृति का लक्ष्य भाषा की संस्कृति से सहसंबंध स्थापित कर सके। अनुवाद को दुबारा उत्पन्न करने की प्रक्रिया द्विसांस्कृतिक कहलाती है।

किन्तु इसमें कठिनाई तब और बढ़ जाती है जब पाठ में भिन्न समाजिक और सांस्कृतिक पक्ष हों। मूलतः भारतीय संस्कृति सामासिक संस्कृति है अतः किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी में या हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए समस्याएँ उतनी नहीं है। फिर भी कुछ समस्याएँ अवश्य हैं। जैसे-मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ तथा लोक जीवन से लिए गए बिंबों, अलंकारों और मिथकों के अनुवाद की समस्याएँ। इस प्रकार अनुवाद के माध्यम से संस्कृति को प्रेषित करने का काम कठिन है। इससे पहले की अनुवादक दो संस्कृतियों के बीच पुल बनाए, उसके लिए अनिवार्य है कि वह उन दोनों संस्कृतियो को पूरी तरह समझ सके, जैसे मराठी में ''लावणी' शब्द मराठी संस्कृति से जुडा है जिसका अनुवाद हिन्दी के 'मुजरा' के समकक्ष किया जाता है।इसलिए अनुवादक को चाहिए कि वह अच्छी तरह से सांस्कृतिक संदर्भ की संपूर्णता को समझे, जिससे कि अनुवाद सकारात्मक हो सके। इसी लिए तो डॉ.माधव सोनटक्के यह कथन उचित ही है कि "मूल साहित्यिक कृति में अभिव्यक्त सांस्कृतिक संदर्भों के रूपांतर की भी अपनी सीमा है। मूल कृति की भाषा और अनुवाद की भाषा में सांस्कृतिक समानता हो तो यह दिक्कत नहीं आती, लेकिन उनमें सांस्कृतिक असमानता जितनी अधिक मात्रा में होती है, उस भाषा में उसके अनुवाद में असहजता बढ़ जाती है। इसे अनुवाद का दोष नहीं बल्कि सीमा मानी जानी चाहिए। सांस्कृतिक संदर्भों का अतियायी संप्रेषण दुराग्रही अनुवाद को क्लिष्ट बनाता है, और नीरस भी।"7 शायद इसीलिए कैलासचंद्र भाटिया का मानना है कि "सांस्कृतिक संदर्भों से भरपूर रचनाओं को अनुदित करना भी समस्या-प्रधान है। इस दिशा में अभी तक कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ है जिससे एकरूपता बनी रहे।"8

सांस्कृतिक अनुवाद के लिए अनुवादक को सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यायों का चुनाव, लिप्यंतरण, शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद, आगत शब्दों का अनुवाद, विस्तार, संक्षेप आदि का काम अकेले ही करना पड़ता है। इस काम को सफलतापूर्वक करने के लिए अनुवादक से मुख्य अपेक्षाएँ हैं - भाषा का ज्ञान, विषय का ज्ञान, अभिव्यक्तिकरण का कौशल।

प्रो.दिलीपसिंह इस बात पर बल देते हैं कि "अनुवाद की दृष्टि से भाषा की अर्थगत संरचनाको समझने के पहले यह निर्धारित करना भी अनुवादक के लिए आवश्यक होता है कि रूपात्मक संरचना (formal structure) और अर्थगत संरचना (semantic structure) एक दूसरे से भिन्न होते हैं।"9

साहित्य के अनुवाद के माध्यम से हम केवल किसी अन्य भाषा के लेखन से ही परिचित नहीं होते बल्कि उस भाषा समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं और विशेषताओं से भी परिचित होते हैं। अनुवादक एक भाषा में रचित साहित्य के अर्थ और रूप मात्र को नहीं बल्कि उसके मूल्यों और सरोकारों को भी दूसरी भाषा में प्रकट करने का दायित्व निभाता है। ऐसा करने के लिए उसका द्विभाषिक के साथ साथ द्विसांस्कृतिक होना भी अपरिहार्य शर्त है। इस स्तर पर साहित्य का अनुवादक मात्र अनुसरणकर्ता नहीं होता बल्कि मौलिक लेखक की भाँति ही सृजनकर्ता होता है।

निष्कर्ष-जॉर्ज स्पाईनर कहते हैं कि अनुवाद क्रिया तो एक जीवंत खोज है, अतीत और वर्तमान दो संस्कृतियों के बीच निरंतर बहती ऊर्जा की धारा है। दो संस्कृतियों के बीच अनुवाद रूपी पुल के निर्माण में साहित्यिक अनुवाद की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसका सीधा-सा कारण यह है कि किसी भौगोलिक क्षेत्र का साहित्य उस क्षेत्र की संस्कृति, कला और रीतियों का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए तो कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। बस यही वह चीज है जो साहित्य अनुवाद को बेहद उत्तरदायी और कठिन कर्म बना देती है। किसी भी एक साहित्यिक कृति का उसकी मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय कितनी ही सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। ये सभी सावधानियाँ सांस्कृतिक भिन्नताओं के चलते समस्याओं का रूप ले लेती हैं। क्योंकि सांस्कृतिक भिन्नता को समाप्त करने के लिए भाषा को मूल रचना की भाषा में व्यक्त प्रतीकों, भावों और उन अनेक विशेषताओं को सटीक तरीके से लक्ष्य भाषा में उतारना होता है और साथ ही यह ध्यान रखना होता है कि लक्ष्य भाषा में उतरी कृति पढ़ने वाले को सहज और आत्मीय लगे।

अतः हमें "अपनी भाषा की विविध प्रकार की प्रतिभाओं और अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को, उनके मध्य होनेवाले आदान-प्रदान को नजरअंदाज किए बगैर, स्वीकार करना चाहिए, जो भाषाओं के मध्य सदियों से होता आ रहा है।"10

संदर्भ-ग्रंथ: **s**

1. विश्व बाजार में हिंदी-संपा.महिपाल सिंह-देवेन्द्र मिश्र,पृ.166
2. भारतीय साहित्य-स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ-के.सच्चिदानन्दन,पृ.28
3. डॉ.ओंकार कौल, भारतीय भाषाएँ एवम् हिंदी अनुवाद-समस्या-समाधान-संपादक-कैलाशचंद्र भाटिया,पृ.81
4. भारतीय साहित्य-स्थापनाँ और प्रस्तावनाएँ-के.सच्चिदानन्दन, पृ.28
5. साहित्यानुवाद-डॉ.आरसू,पृ.26
6. अनुवाद की व्यापक संकल्पना, पृ.46
7. डॉ.माधव सोनटक्के ,अनुवाद क्या है-डॉ.नंदकिशोर सागा, संपा.डॉ.भ.ह.राजूरकर एवम् डॉ.राजमल बोरा, पृ.101
8. अपनी बात, भारतीय भाषाएँ एवम् हिंदी अनुवाद-समस्या-समाधान-संपादक-कैलाशचंद्र भाटिया, पृ.4
9. अनुवाद की व्यापक संकल्पना, पृ.46
10. प्राक्कथन,भारतीय साहित्य-स्थापनाँ और प्रस्तावनाएँ-के.सच्चिदानन्दन,पृ.4

****

डॉ.उत्तम पटेल

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जि.वलसाड